पाठ्यक्रम

पहली तथा दूसरी कक्षा (प्रथम भाषा)

नोट :–

(क) पहली व दूसरी कक्षा को एक ही ग्रेड (श्रेणी) माना गया है, जिसका मिला–जुला (सांझा) एक पाठ्यक्रम होगा । पर सरलता के लिए इसको दो भागों में बाँट लिया गया है । अध्यापक और भी आगे इसको इकाइयों में बाँट सकता है ।

(ख) बच्चे के वर्तमान स्तर का निर्णय उसके उस ग्रेड में पढ़ने के समय से नहीं, अपिनु विभाजित इकाइयों को सम्मुख रखकर किया जाए। उसकी प्राप्तियों के मूल्यांकन का आधार भी पहले और दूसरे भाग में, सम्बन्धित इकाइयों को पूरा करने के उपरान्त, उसके मानसिक स्तर और योग्यता को बनाया जाये ।

(ग) प्रत्येक श्रेणी का यह पाठ्यक्रम एक विशाल संकेत और स्तर निधारित करता है । ऐसा भाषा की पढ़ाई के सम्बन्ध में होना स्वाभाविक है। पाठ्य–सामग्री, शैक्षिक – अनुभव और क्रियाकलाप के विस्तार अध्यापक ने स्वयं अपने साधनों और बालक की स्कूल जाने से पहले की घरेलू अवस्था की जानकारी को सम्मुख रखकर तैयार करना है ।

(घ) प्राइमरी श्रेणियों में नये शैक्षिक अनुभव प्रदान किये जाते हैं। इन अनुभवों को एक या दो श्रेणियों में दोहराना काफी होता है

कक्षा –1 (प्रथम भाषा)

मौखिक अभिव्यक्ति : विद्यार्थी में ऐसी योग्यता का विस्तार करना जिससे वह :

1 हिंदी की सभी ध्वनियों की चित्र देखकर पहचान कर सके ;

2 हिंदी की मिलती – जुलती ध्वनियों की पहचान कर सके;

3 हिंदी की मात्राओं की पहचान कर सके ;

4 अनुस्वार और अनुनासिक में भेद कर सके ;

5 मौखिक निर्देशों को समझ सके ;

6 अपने परिवेश/पर्यावरण की जानकारी प्राप्त कर सके ।

7 घर और समाज में विचरते हुए नैतिक मूल्यों जैसेः प्रेम, सहानुभूति, आदर, परिश्रम की पहचान कर सके ;

8 चित्र देखकर बात कर सके;

9 समूह में या व्यक्तिगत रूप से हाव – भाव के साथ कविता का उच्चारण कर सके।

पढ़ाई : विद्यार्थी में ऐसी योग्यता का विस्तार करना जिससे वह :

1 चित्र देखकर हिंदी वर्णमाला को पढ़ सके ;

2 निर्धारित पाठ्य – पुस्तक में से शब्दों और वाक्यों को स्पष्ट रूप से पढ़ सके ;

3 अपने परिवेश से नये शब्द पढ़ सके ।

लिखाई : विद्यार्थी में ऐसी योग्यता का विस्तार करना जिससे वह :

1 लिखने के लिए सही मुद्रा में बैठ सके ;

2 लिखने से सम्बन्धित सामग्री का ठीक प्रयोग करने के योग्य हो सके ;

3 देवनागरी लिपि के चिह्नों को सही –सही लिखने के योग्य हो सके ;

4 स्पष्ट और आनुपातिक (एक सार) अक्षर लिखने के योग्य हो सके ;

5 शब्दों में आई ध्वनियों को अलग कर सके ;

6 ब्लैकबोर्ड से और पाठ्य – पुस्तक में से शब्दों और वाक्यों को देखकर लिख सके।

पाठ्य – पुस्तक : हिंदी पुस्तक –1 (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित)

कक्षा – 2
2 (प्रथम भाषा)

मौखिक अभिव्यक्ति

विद्यार्थी :

1 बात सुनकर उसको सही – सही आगे बताने के योग्य हो ;

2 वक्ता की आवाज़ के उतार – चढ़ाव से ही कथनों, प्रश्नों और विस्मय प्रकट करने वाले वाक्यों की पहचान कर सके;

3 आवाज़ के उतार – चढ़ाव से ही खुशी, आश्चर्य, क्रोध आदि भावों की अभिव्यक्ति करना :

4 आवाज़ के उचित – चढ़ाव और हाव – भाव से समूह – गान, कविता पाठ करना और कहानी कहना आदि में भाग ले सकने के योग्य हो सके ;

5 बोलते समय भाषा के प्रामाणिक रूप को अपनाने की ओर प्रेरित हो ।

पढ़ाई :

1 निर्धारित पाठ्य – क्रम में से साधारण वाक्यों को ऊँचा बोलकर, उसमें प्रयुक्त विराम – चिह्नों (बल, ठहराव आदि) को बोलकर महसूस करना;

2 ज़ोर से पढ़ते समय विराम – चिह्नों, अर्द्ध विराम, पूर्ण विराम आदि के प्रति सावधानी का प्रयोग;

3 वाक्यों को उचित और अर्थ पूर्ण शब्द – खण्डों में बाँटना

4 कहानियों, कथनों, वार्तालापों और कविताओं को समझ से पढ़ना;

5 जाने–पहचाने शब्दों के संयुक्त अक्षरों को साथ पढ़ना;

6 पहले सीखे हुए शब्दों के अलावा 200 से 250 तक नये शब्दों को ग्रहण करना। यह शब्दावली बच्चे के घर, पड़ोस और स्कूल में उन वस्तुओं, घटनाओं आदि के बारे में हो, जिनमें बच्चों की रूचि हो ।

लिखाई : विद्यार्थी में लिखने की योग्यता का विस्तार करना जिससे वह :

1 लिखते समय आँखों और हाथों की हरकतों में सांमजस्य पैदा कर सके ;

2 वर्णों के रूप, आकार, तिरछापन और एकसारता द्वारा लिखाई में सुधार कर सके;

3 पेन्सिल, कलम या स्लेटी से कॉपी , तख़्ती या स्लेट पर स्पष्ट लिखाई के योग्य हो;

4 छोटे और साधारण वाक्यों के श्रुतलेख और प्रतिलेखन के योग्य हो;

5 दिए हुए शब्दों को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कर सके ।

पाठ्य – पुस्तक : हिंदी पुस्तक –2 (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित)